श्रीभगवद्गीता से श्लोक

श्रीभगवद्गीता २.२०

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

परम आत्मा का न कभी जन्म होता है और न ही कभी इसकी मृत्यु होती है।
इसका अस्तित्व सदैव था, और सदैव रहता है।
परम आत्मा अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन है।
शरीर का हनन होने पर भी इसका हनन नहीं होता।

© एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।
अंग्रेज़ी भाषान्तर "You Must Trust Yourself: A Talk by Gurumayi Chidvilasananda,"
दर्शन पत्रिका अंक ५२, *In the Company of the Saints*, पृष्ठ ४५ से।